गोवा में कछुआ संरक्षण

रोशनी कुट्टी

गोवा - यह नाम मन में सूरज, रेत, समन्दर और ढेरों पर्यटकों की छवि उकेर देता है। ये पर्यटक अपने पीछे कचरे के ढेर और स्थानीय इकॉलॉजी की तबाही छोड़ जाते हैं। गोवा के अधिकांश रेतीले तटों की यह एक आम तस्वीर है। हालांकि, अब स्थानीय लोगों और राज्य सरकार के एक हिस्से में नई जागरूकता फैल रही है और वह यह कि इस तरह का पर्यटन ज़्यादा चलने वाला नहीं। यह तो सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी की गर्दन मरोड़ने जैसा ही है। पर्यटकों को लुभाने वाले और भी कई बेहतर तरीके हैं।

गोवा में पांव फैला रहे नए तरह के पर्यटन का एक उदाहरण है मोरझिम तट। उत्तर गोवा के पेरनेम तालुका के दो विख्यात समुद्र तटों वेगाटोर और हारमल के बीच का कम जाना पहचाना तट है मोरझिम। इस तट पर पर्यावरण क्षति काफी कम हुई है। यही कारण है कि यहां ऑलिव रेडले कछुए हर साल अण्डे देने आते हैं। लेकिन स्थानीय लोगों के अनुसार इस 'नन्हे चमत्कार' के कई अन्य योगदान भी हैं। गर्भवती कछुओं और अण्डों की चोरी रोकने के लिए स्थानीय लोग पूरे समय तटों की पहरेदारी करते हैं।

समुद्री कछुए

भारतीय समुद्र में पाए जाने वाले 5 प्रजातियों के कछुओं में से ऑलिव रेडले एक है। ये लगभग 2 फीट लम्बे और 600-700 किलोग्राम भार वाले छोटे कछुए हैं। अन्य समुद्री कछुए हैं : कछुए के सूप के लिए मशहूर ग्रीन टर्टल, अपने सुंदर कवच के लिए हॉक्सबिल और लॉजरहेड। इनमें से सबसे ज़्यादा पाए जाने वाले ऑलिव रेडले कछुए पूरे भारतीय समुद्री तट पर अपने घर बनाते हैं। वन्य सुरक्षा ऐक्ट, 1972 के तहत इसे प्रजाति - I (जोखिमग्रस्त) का दर्जा दिया गया है।

हालांकि समुद्री कछुए समुद्री जीवन से पूरी तरह से अनुकूलित हैं, लेकिन अण्डे देने के लिए इन्हें किनारों तक आना ही पड़ता है। समुद्र में समागम के बाद मादा समुद्र से कोई 10-12 मीटर दूर किसी ऊंचे स्थान पर कोई उपयुक्त जगह ढूंढती है। एक जगह पर 100-150 अण्डे देने के बाद मादा कछुआ उन्हें रेत से ढंक देती है और फिर अपने शरीर से रेत को ठोकती पीटती है। इसके बाद वह वापस समुद्र की ओर चल देती है। सूरज की गर्मी और उनके अपने चयापचयन से अण्डे सेए जाते हैं। लगभग 50 दिन रेत में गुज़ारने के बाद अण्डों में से कछुए निकलते हैं और तेज़ी से हरकत करते हैं और जैसे ही उनका घर टूटता है वे बाहर निकल पड़ते हैं। एक साथ निकलने की वजह से कम से कम कुछ कछुओं का तो बचना सुनिश्चित हो जाता है। आम तौर पर वे रात में निकलते हैं और समुद्री पानी पर झिलमिलाती चांदनी से समुद्र की स्थिति पहचानते हैं।

उस वक्त की स्थिति

जब कैप्टन गेरार्ड फर्नान्डीज़ अपने गांव टेम्बवडो में बसने आए। मोरझिम के स्थानीय बाज़ार में कछुए के अण्डों और मांस को बेचने के लिए इनका भारी मात्रा में शिकार होता था। लेकिन अब मोरझिम तट के सम्मुख बसा टेम्बवडो गांव अब कछुआ संरक्षण के लिए मशहूर हो चुका है। फौज से स्वैच्छिक निवृत्ति लेकर कैप्टन फर्नान्डीज़ अपने गांव में आकर बस गए। आज वे कछुआ संरक्षण मोर्चे के अगुआ हैं जिसे वे धीरे-धीरे अन्यों के हाथ सौंपना चाहते हैं। उनका